नाम ▸ डॉ० सुजाता गुप्ता
विभाग ▸ हिंदी
वर्ग ▸ स्नातक द्वितीय खंड
पत्र ▸ IV
शीर्षक ▸ शासन की बंदूक
कवि ▸ नागार्जुन

'शासन की बन्दूक' (1966 ई०)

जनता की आवाज को अपने काव्य का माध्यम बनाने वाले जनकवि नागार्जुन हैं। 'शासन की बंदूक' नामक कविता तत्कालीन सत्ताधारी शासकों के प्रति कवि का कटाक्ष है। वे जनता के उत्तरदायित्व पर सत्ताधारकों से प्रश्न पूछते हैं। नागार्जुन सच्चे अर्थों में जनता के कवि थे। इसीलिए वे जनता की समस्याओं को अपने काव्यों के माध्यम से व्यक्त करते थे और सत्ताधारकों से उनका हल भी पूछते थे। वे जनता पर हो रहे अन्याय, अत्याचार, दमन, शोषण को ~~अपनी~~ मिटाना चाहते थे। इसके प्रति उन शासकों के प्रति मन में जो कड़वाहट थी, वह कविताओं के माध्यम से प्रकट होती थी। 'जनवादी' दृष्टिकोण अपनाने के कारण, वे पूंजीवाद के विरोध में थे। उनके काव्यों में तरह-तरह के राजनीतिक हथकंडों का भी जिक्र होता था, जिसे वे सरल और सहज रूप में हास्य और व्यंग्य के साथ प्रस्तुत करते थे।

उनकी राजनीतिक पकड़ बहुत ही सतर्क और सजग है। कवि को हम 'जनता का कवि' कह सकते हैं, जिनकी राजनीति मुख्य रूप से जनता के प्रश्नों को लेकर के ही है। 'शासन की बंदूक' कविता भारतीय लोकतंत्र में आपातकाल के समय से पूर्व की है। यह कविता तात्कालीन शासन के प्रति ~~...~~ व्यंग्य है। जिसमें जनता की संवेदनाओं को सत्तासीन लोगों तक पहुँचाने का प्रयास है:

"खड़ी हो गई चाँपकर कंकालों की हूक
नभ में विपुल विराट-सी शासन की बंदूक"

कविता में आपातकाल के पूर्व के समय बंगाल में, सत्ता द्वारा

Scanned with CamScanner

जनता पर अमानुषी व्यवहार किए गए थें। सरकार के विरोध में उठाए गए स्वरों को बेरहमी से कुचला गया था। कवि का जनशक्ति में अगाध विश्वास है और ऐसी अराजक व्यवस्था पर अपने काव्यों के माध्यम से निर्मम प्रहार करते हैं :-

"उस हिटलरी गुमान पर सभी रहे हैं थूक
जिसमें कानी हो गई शासन की बंदूक ,"

सत्ताधारी शासक की तुलना वे एक ऐसे तानाशाह से कर रहे हैं, जिसके नाम का पर्याय ही शोषण और दमन का जीवंत स्वरूप बन गया हो। ऐसी दमनकारी सत्ता के ऊपर सभी थूककर उसके प्रति अपना असंतोष प्रकट कर रहे हैं। यह शासक के प्रति अजी वितृष्णा के भी भाव हैं। जिसे वह सुनकर भी अनसुना कर दे रहा है। ऐसे आवेशित वातावरण में मानो सत्ता में बैठे लोगों की सुनने की शक्ति दसगुणा कम हो गयी है। अर्थात् विरोध का स्वर, जनता की चीखें, उन्हें सुनाई नहीं दे रही हैं। यहाँतक कि विनोबा भावे जैसे जनता के प्रतिनिधि भी मूक बन, खड़े हैं। ऐसे शासन को कवि व्यंग्यात्मक लहजे में 'धन्य' कहते हैं। जहाँ सरकारी ताडंव पर सर्वहारा का संघर्ष चित्रित है। देश की असहायता पर दुखी हो, कविताओं के द्वारा उस आक्रोश को व्यक्त किया है। सामान्य जन से जुड़े सवालों के प्रति उनमें गहरी वचनबद्धता है। जनता के मनोभावों एवं आकांक्षाओं को कविता के माध्यम से मूर्त करने का प्रयास किया। उनका आशय सत्य के परास्त और निस्तेज होने से है और अंहिसा के मार्ग से हटने पर भी सत्ता पर कुठराघात किया। जहाँ-तहाँ आम लोगों के दमन से ~~सत्तासीन~~ शासकों ने अपने हिंसक रूप का परिचय दिया है। राजनीति से सदाचार का मुखौटा उखाड़कर, उसके असली चरित्र को दिखलाती ये पंक्तियाँ हैं :-

Scanned with CamScanner

"सत्य स्वयं घायल हुआ, गई अहिंसा चूक
जहाँ-तहाँ दगने लगी, शासन की बंदूक
जली ठूँठ पर बैठकर गई कोकिला कूक
बाल न बाँका कर सकी शासन की बंदूक ।"

सत्ता की निरंकुशता, जनता के हल्के-फुल्के विरोध से और बढ़ती जाती है। नागार्जुन इसका सीधे-सीधे स्पष्ट शब्दों में विद्रोह करते हैं। यह कविता उनके इसी तेवर का परिणामस्वरूप है। इसके साथ ही, वह इस 'बंदूक' जो शासन का प्रतीक है, विनती नहीं करते बल्कि उससे बेखौफ होकर उसके ~~~~ पराजय की भी घोषणा करते हैं।

नागार्जुन का शासक के बजाय जनता के पक्ष में खुलकर बोलने का साहस किया है। यही भंगिमा इस काव्य में भी दिखलाई देती है। नागार्जुन की सरल बेबनी उनके व्यंग्य को सर्वविदित कर देती है। वे जनता के कवि हैं, जिन्होंने जनता के जीवनसंघर्षों को, शोषण-अन्याय को अपनी कविताओं में केन्द्रीकृत किया है।

Scanned with CamScanner